राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र का प्रतिनिधि मासिक

• वर्ष – 14, अंक – 6 • दिल्ली सितम्बर 1991 • मूल्य 1 रुपया

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति

इस अंक में पेज

1. छात्र संघ : राष्ट्रीय पुनर्निर्माण……3
2. पाठक संदेश……4
3. दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ…5
4. छात्र संघ चुनावों में……7
5. समाचार दर्पण……8
6. डूकू उपरांत डूटा पर भी……11
7. राष्ट्रीयता-राजनीति नहीं……13
8. शैक्षिक वातावरण सुदृढ़ीकरण……14
9. दांव पर लगी है छात्र संघ……17
10. छात्र समुदाय लगाये अकुंश ……21
11. वामपंथी टिके बंगाल में गुण्डागर्दी…23

—: संपादक मंडल :—
ललित बिहारी गोस्वामी
डॉ० दिनेश पाहूजा
अतुल गंगवार

—: प्रकाशन कार्यालय :—
16/3676 हरध्यान सिंह रोड,
रेंगर पुरा, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष-5728215

—: मुद्रक :—
किरण मुद्रण केन्द्र
A-38/2, मायापुरी, फेज-I,
नई दिल्ली-110064
फोन : 5416974

सम्पादकीय-

छात्र संघ : राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का एक सशक्त माध्यम

—ललित बिहारी गोस्वामी

दिल्ली-विश्वविद्यालय-छात्र संघ के चुनाव सामने हैं। छात्र संघ एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से छात्र अपनी विविध गतिविधियों को स्वयं प्रभावी व लोकतांत्रिक रीति से पूरा कर पाते हैं। विश्वविद्यालय महाविद्यालय परिसर में छात्रों के समक्ष आने वाली कठिनाईयों को दूर करने एवं विभिन्न अभावों की पूर्ति करने में छात्र संघ की समर्थ भूमिका रहती है। शिक्षा व्यवस्था और शैक्षिक जगत् की विभिन्न संस्थाओं में छात्रों के सक्रिय सहभाग को सुनिश्चित कर रचनात्मक दिशा देने का दायित्व स्वभावतः छात्र संघ का बनता है। कभी-कभी छात्र-समस्याओं के निदान और समाधान के लिए आंदोलनात्मक रास्ते भी आवश्यक हो जाते हैं। आंदोलनों की गरिमा बनाए रखने के लिए उन पर पकड़ और नियंत्रण का गुरुतर भार भी छात्र संघ पर आता है। छात्र संघ और ट्रेड यूनियन में निश्चय ही पर्याप्त अंतर है। इस अंतर को निरंतर अपने दृष्टिपथ में रखना होगा। विद्यार्थियों के एक छोटे से वर्ग के न्यस्त स्वार्थों की पूर्ति का मंच छात्र संघ नहीं है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की यह दृढ़ मान्यता है कि छात्र कल का नहीं, आज का नागरिक है। यह मान्यता फिर छात्र को विश्वविद्यालय, महाविद्यालय परिसर में ही बँधा नहीं रहने देती। संपूर्ण राष्ट्र की पुनर्रचना का दिव्य ध्येय और उसकी प्राप्ति, पूर्ति के लिए सृजनात्मक क्रियाशीलता के वातावरण के निर्माण की दिशा में प्रयासरत हो छात्र एवं युवाओं को परिवर्तन का माध्यम और औजार बनाने का कठिनतर कार्य यदि छात्र संघ संपादित कर सके, तभी यह अपनी संपूर्ण सफलता को प्राप्त कर सकेगा, अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकेगा। इसके लिए उसे निश्चय ही 'रॉक शो' जैसे हल्के फुल्के कार्यक्रमों का आयोजन छोड़ना पड़ेगा। छात्र और युवा-जगत को भारतीय दृष्टि देने एवं उसे स्वाभिमानी, संवेदनशील, समाज-चिंतक एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने हेतु विचार गोष्ठियों, परिसंवाद, महापुरुषों की जयंतियाँ, राष्ट्रीय और सामाजिक दिवसों का आयोजन, समाज के विभिन्न क्षेत्रों

—शेष पृष्ठ 24 पर

पाठक संदेश

सम्पादक महोदय, नमस्कार

जैसा की विश्वविद्यालय हर वर्ष दावे करता है कि कॉलेजों में प्रवेश निष्पक्ष रूप से किये जायेगें और प्रवेश ठीक प्रकार से हो इसके लिए कई कमेटियां भी बनाई जाती है जो कि सिर्फ नाम मात्र ही कार्य करती है। प्रवेश के समय छात्रों को परेशान किया जाता है कॉलेज प्रवेश देने में अपनी मनमर्जी करता है इस वर्ष भी ऐसे कई मामले प्रकाश में आए जिससे पता चलता है कि कालेज किस हद तक अपनी मनमर्जी करते है। इनमें से एक मामला 'खालसा कालेज (प्रात:) में आया जिसमें एक छात्र पवन द्वीप समरवाय जिसका नाम कॉलेज वरीयता सूची में आ गया था परन्तु उसे सिर्फ इसलिए प्रवेश नहीं दिया गया कि वह सरदार होते हुए भी अपने नाम के साथ सिंह शब्द का प्रयोग नहीं कर रहा जबकि वह छात्र और उसके पिता सरदार थे।

एक अन्य मामला, जिसमें किरोड़ीमल कॉलेज में बिहार से आये छात्रों को प्रवेश इसलिए नहीं दिया जा रहा था कि उनका परीक्षा परिणाम गत वर्ष लेट आया था जिसके कारण ही वे छात्र पिछले वर्ष प्रवेश नहीं ले सके। हालांकि छात्रों के निरन्तर दबाव बने रहने के कारण पहले तो प्राचार्य ने 5% अंक कम कर प्रवेश देने की बात कही परन्तु छात्रों द्वारा घेराव किये जाने के बाद सभी छात्रों को प्रवेश देने की घोषणा की। परन्तु मुख्य प्रश्न उठता है कि कब तक कॉलेज और विश्वविद्यालय इसी प्रकार छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ करने का खेल खेलते रहेगें ?

अजय चौहान
सचिव
अरविन्दो महाविद्यालय (सान्ध) छात्र संघ

● ● ●

श्रीमान सम्पादक महोदय,

अभी हाल में ही केन्द्र सरकार द्वारा लोकसभा में लाया गया धर्म विधेयक बिला नितान्त अव्यवहारिक एवं खामियों से भरा हुआ है। इसके पास होने पर भयंकर दुष्परिणाम राष्ट्र के सामने आ सकते है। इसकी कुछ महत्वपूर्ण खामियां है। एक तो जम्मू-कश्मीर जो कि भारत का एक अभिन्न अंग है, राज्य है को इस विधेयक से अलग रखा गया है। दूसरा इससे सरकार की खुल्लम खुल्ला तुष्टिकरण की नीति लागू करने की भावना प्रतीत होती है। तीसरा बिना सोचे समझे बिना आवश्यक विचार विमर्श के बिल का लाया जाना सरकार का हड़बड़ाहट में केवल एक दूसरे राजनैतिक दल को नीचा दिखाने की कार्यवाही जान पड़ती है। सरकार चाहे कोई भी हो उसका कर्तव्य है कि वह हमारे राष्ट्र की प्रचीन गौरवशाली संस्कृति की रक्षा करें। राष्ट्रीय अपमान के चिन्हों को हटाये एवं जनमत की प्रबल भावना का आदर करे। इस प्रकार यह विधेयक लाया जाना सरकार का राष्ट्र को साम्प्रदायिकता की आग में धकेलने का कदम है।

अवधेश शर्मा
उपाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ

● ● ●

प्रिय सम्पादक गण,

पिछले दिनों समाचार पत्रों में तामिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता द्वारा दिये गये मासिक बयान के लिए वे वास्तव में धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही ऐसे लोगों को भी इससे सबक मिलता है जो हर समय भा० ज० पा० को ऐसी बातों के लिए साम्प्रदायिक करार देते है। सुश्री जयललिता ने पिछले दिनों केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि वह उसे मंदिर सुधार न्यास के द्वारा उसे निधि प्रदान करे जिससे वह दक्षिण भारत में मंदिरो की निरन्तर गिरती हुई स्थिति में सुधार ला सके उनका जीर्णोद्धार करवा सके। इस प्रकार की पहल के लिए वे निसंदेह बधाई योग्य है। साथ ही वे अपने आपको राष्ट्रवादी सोच की नेता के रूप में अपनी पहचान कराती है आशा है अन्य राजनैतिक दल के नेता भी इस घटना से सबक लेगें।

राजकुमार
संगठन मंत्री
धोला कुआं विभाग

● ● ●

आदरणीय सम्पादक मंडल,

मैंने आपका अगस्त मास का अंक पढा। सम्पादकीय पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई इस बात के लिए मैं आप को धन्यवाद देती हूँ कि आपने अपने सम्पादकीय अंश में अपने राष्ट्र के महान सिद्ध पुरूष अमूर्त चिन्तक एवं योगी पुरूष महर्षि अरविन्द के विचारों को छापा है। उनने द्वारा कहा हुआ कथन कि असत्य है यह राष्ट्र विभाजन शनैः शनैः आज की कसौटी पर खरा उतर रहा है। आज के इस घोर कलयुगी वातावरण में भी महर्षि अरविन्द की भविष्यवाणियां सार्थक है। आज भी उनके कथन हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। वर्तमान में हमारे राष्ट्र के विभिन्न राजनेताओं, समाज सुधारकों, चिन्तकों को उनके त्यागी सादगी एवं ओजस्वी जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

सोनिया सेठ
तृतीय वर्ष
विवेकानन्द महिला महाविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ-एक संक्षिप्त इतिहास

—राजकुमार भाटिया

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ पूरे भारत में अपने प्रकार का अकेला विश्वविद्यालय है। आपातकाल के दो वर्षों (1975-76) तथा मण्डल आंदोलन के कारण गत वर्ष (1990) में इसके चुनाव नहीं हुए अन्यथा 1954 से इसके चुनाव अबाध रूप से होते रहे हैं। संभवतः देश का कोई और विश्वविद्यालय छात्र संघ नहीं है जिसके चुनाव इतने समय से निर्विघ्न रूप से हुए हों प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली के आधार पर छात्र संघ के चुनाव वाले मतदाताओं की सबसे बड़ी संख्या भी इसी छात्र संघ से जुड़ी है। लगभग 70,000 विद्यार्थी चुनाव में भाग लेते हैं तथा जब चुनाव आता है तो एक बार संपूर्ण दिल्ली में हलचल मच जाती है। संभवतः यह देश का सबसे अधिक चर्चित चुनाव होता है।

छात्र संघ के इतिहास में कई मोड़ आये। प्रारंभ में यह दिल्ली यूनिवर्सिटी यूनियन कहलाता था, बाद में इसका नाम दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन हुआ। पहले इसका चुनाव अप्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली के माध्यम से होता था, सन् 1973 से प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली अपनाई गई। शुरू के वर्षों में केवल तीन पदाधिकारी चुने जाते थे अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व सचिव, बाद में सह सचिव भी चुना जाने लगा।

छात्र संघ के संविधान के अनुसार छात्र संघ से संबद्ध होने अथवा न होने का अधिकार किसी कॉलेज को है। आज भी दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक कॉलेज इससे संबद्ध नहीं हैं। समय समय पर कुछ कॉलेज इससे जुड़ते टूटते रहे हैं परंतु अधिकांश कॉलेज परम्परा से जुड़े रहे हैं। तथा जुड़ने का क्रम ही अधिक प्रबल रहा है। छात्रा महाविद्यालयों का इससे जुड़ना गत कुछ वर्षों में ही हुआ है तथा आज भी मात्र पांच छात्रा महाविद्यालय इससे सबद्ध हैं।

अप्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली, 1972 तक लागू रही, के अंतर्गत पहले चरण में महाविद्यालयों में सुप्रीम कांउसलर चुने जाते थे। सौ विद्यार्थियों पर एक परंतु एक कॉलेज से दस से अधिक नहीं इस प्रकार कांउसलर चुने जाते थे। दूसरे चरण में महाविद्यालय छात्र संघों के अध्यक्ष व सुप्रीम कांउसलर मिल कर जिनकी संख्या आखिरी वर्षों में 300 से 400 तक हो गई थी, विश्वविद्यालय छात्र संघ पदाधिकारियों का चुनाव करते थे।

—शेष पृष्ठ 18 पर

त्याग का फल

उस समय भारत में स्वतंत्रता आंदोलन ज़ोर पकड़ रहा था। सरकारी शिक्षा संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त करने का भी बहिष्कार होना आवश्यक ही था। किंतु उस समय आंदोलनकारियों के पास इतना न धन था और न साधन ही जिससे वे महाविद्यालय चला सके। कुछ रुपया इकट्ठा हुआ। महाविद्यालय की रूपरेखा बनाई। किंतु उसके संचालन के लिए भी तो योग्य और अनुभवी व्यक्ति की आवश्कता थी जो बिना काफी वेतन के सम्भव नहीं था। विद्यालय की ओर से केवल 75 रुपये मासिक वेतन पर संचालन का विज्ञापन दिया गया। सभी ने सोच रखा था कि इस वेतन पर कौन अच्छा आदमी आवेगा। सभी निराश ही थे कि अचानक एक आवेदन पत्र आया। और वह भी ऐसे योग्य और अनुभवी व्यक्ति का जिसकी स्वप्न में भी आशा नहीं की जा सकती थी। बड़ोदा कालेज के अध्यक्ष श्री अरविंद घोष ने, जिन्हें उस समय अन्य सुविधाओं के साथ सात सौ रुपये मासिक वेतन मिलता था; उसे छोड़कर बंगाल में स्थापित इस नव-राष्ट्रीय महाविद्यालय के लिए 75 रुपये मासिक पर काम करना स्वीकार कर लिया।

जहां इतना त्याग आदर्श किसी संस्था का उपस्थित करें वहां छात्रों के चरित्र एवं भावनाओं पर क्यों प्रभाव पड़ेगा। उस विद्यालय के छात्रों ने आगे चलकर स्वतन्त्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भाग लिया और उनमें से कितने ही चोटी के राजनेता बनें। □

Vital tips
for fine writing
PILOT Hi-Tecpoint 05
PILOT®
Hi-Tecpoint 05®
• Especially designed for continuous flow for 1.5 kms. of smooth writing with 0.3 mm fine width line
• Original Japanese technology with a flow tube and a unique stainless steel 0.5 mm tip
• Combination of fountain pen, ball pen, roller pen and sign pen —ALL-IN-ONE!
• Available in 8 vibrant colours. With refillable inks. Blue, Black, Red, Green, Turquoise, Pink, Violet and Brown
* Regd. trademarks of PILOT CORPORATION, JAPAN
Bestsellers
PENNED BY LUXOR
Luxor®
LUXOR PEN CO.,
229, Okhla Industrial Estate, Phase III, New Delhi 110 020, India. Tel: 633318 6833372, 6835607, Tlx: 031 75069 SIGN IN, Fax 011 6847602.
Tel. Delhi (Sales): 522956, Bombay: 6730251, Calcutta: 250407

छात्र संघ चुनावों में राजनैतिक दखल बन्द हो !

—श्री मोहन लाल

दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ कोषाध्यक्ष श्री मोहन लाल (आचार्य, पी० जी० डी० ए० वी० कॉलेज) से **मुकेश अग्रवाल** की बात चीत के मुख्य अंश—

- **दिल्ली विश्वविद्यालयों में छात्र संघों का गठन किस उद्देश्य को लेकर किया गया था ?**

☐ भारत एक लोकतंत्र है। आज विश्वविद्यालय में पढ़ने वाला विद्यार्थी आगे चलकर देश का सच्चा नागरिक सिद्ध हो, लोकतंत्र को सही रूप में समझ सके। एक श्रेष्ठ लोकतांत्रिक सरकार चुनने में सहयोग दे सके, समय मिलने पर देश को कुशल नेतृत्व दे सके, इसके लिए उसे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। विश्वविद्यालय छात्र संघों का गठन मूलतः आगामी नागरिकों को इस प्रशिक्षण देने के लिए ही किया गया था।

- **क्या छात्र संघ इस उद्देश्य की पूर्ति में सफल हुए हैं ?**

☐ एक सीमा तक प्रशिक्षण तो इनसे मिलता ही है—किंतु कठिनाई यह है कि आजकल विभिन्न राजनैतिक दल भी इन चुनावों में सक्रिय रहते हैं। फलतः आज विद्यार्थी राजनैतिक दलों के इस्तेमाल की चीज बनकर रह गए हैं। वे अपने लिए निर्देश भी राजनैतिक आकाओं से ही प्राप्त करते हैं। इस कारण हड़ताल जैसी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है।

- **क्या इन छात्र संघों की कोई राष्ट्रीय-सामाजिक भूमिका भी है ?**

☐ प्रत्यक्ष रूप में नहीं। भविष्य में राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओं का सजग भागीदार बनने वाले नागरिक को प्रशिक्षण देने का कार्य भार इन छात्र संघों का है।

- **चुनाव-प्रचार में छात्र संगठनों की भूमिका पर आप कुछ कहना चाहेंगे ?**

☐ विभिन्न छात्र संगठन भी चुनावों के समय कूदें तो विश्वविद्यालय से सम्बन्धित ही उठाते हैं किंतु इनके कारण परिसर के शैक्षिक वातावरण में कुछ बाधा अवश्य पहुंचती है। उदाहरणार्थ, दिल्ली विश्व विद्यालय छात्र संघ के चुनाव के समय उम्मीदवार विश्वविद्यालय अधिकारियों से अनुमति लेकर ही कालेजों में चुनाव-प्रचार कर सकते हैं, किंतु कई छात्र नेता अथवा छात्र संगठन इसकी परवाह नहीं करता। इसी प्रकार वे गलत तरीके से कालेजों की दीवार और डी० टी० सी० की बसों को भी अपने चुनाव प्रचार से रंग देते हैं।

- **इन स्थितियों में सुधार लाने के लिए क्या आप प्रत्यक्ष चुनाव के विकल्प रूप में कोई अन्य तरीका सुझाना चाहेंगे ?**

☐ चुनाव तो प्रत्यक्ष विधि से ही होने चाहिए। इनमें कोई दोष नहीं है। हां, इन बुराइयों को दूर करने के लिए विश्वविद्यालय कुछ कदम अवश्य उठा सकता है—

(1) बी० ए० प्रथमवर्ष के छात्रों को चुनाव लड़ने की अनुमति न दी जाए।

(2) परीक्षा में 50% अथवा अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी ही चुनाव लड़ने के योग्य घोषित किए जायें। यदि संभव न हो तो भी पिछली परीक्षा में उत्तीर्ण होने की शर्त अनिवार्य रूप से हो।

(3) बी० ए० पास करने के बाद यदि विद्यार्थी बी० ए० में प्रवेश ले तो ऐसे छात्रों को चुनाव लड़ने की छूट नहीं मिलनी चाहिए।

इन कदमों से विश्वविद्यालय राजनीति में बढ़ती

—शेष पृष्ठ 22 पर

प्रदर्शनकारियों ने अधिकारियों से बातचीत करने से इन्कार कर दिया। 9 घंटे लम्बे चले इस दौर के बाद जब अधिकारियों ने पूरी तरह घुटने टेक दिये तब परिषद कार्यकर्ता, अनशन तोड़ने को राजी हुये और रात 1.00 बजे मांगें मानने के समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। गौरतलब बात ये थी कि डीन कॉलेजस श्री राणा जिन्होंने समझौते के शुरूआती दौर से ही कड़ा रूख अपना रखा था। जूस पिलाने की कार्यवाही के समय कबाले मुह लिए पीछे कोने में खड़े दिखाई दिये।

● ● ●

कांग्रेस ने पैंतरा बदला—

दिल्ली विश्वविद्यालय में पिछले दिनों इन्दरा गान्धी फिजिकल ऐजूकेशन एन्ड स्पोर्टस साईंसेज महाविद्यालय में अध्यापकों की नियुक्तियां चर्चा का विषय बना रहा। जिसके चलते विश्वविद्यालय की विद्वत एवं कार्यकारी परिषद् की बैठकों में भी खासे संग्रामे होते रहे। और इन नियुक्तियों को कांग्रेस समर्थन अध्यापक संगठन, सही करार देते हुए, कोई अनियमितता न होने का पुरजोर दावा करता रहा। परन्तु अब पैंतरा बदलते हुए कहना प्रारम्भ किया कि इस निर्मित गठित कमेटी ने भी नियुक्तियों में ही नहीं तो पूरी चयन प्रक्रिया उदाहरणार्थ इस निमित विज्ञापन, चयन समिती के गठन एवं आवश्यक दक्षता वगैरहा सभी हर तरह से नियमानुसार थे एवं विश्वविद्यालय नियमों के अनुरूप थे। परन्तु धोखा इसलिए हुआ क्यों कि विश्वविद्यालय अधिनियम धन निर्देशक एवं अध्यापकों के चयन के लिए भिन्न योग्यता बताता है।

हाल में ही सम्पन्न हुए डूटा चुनावो में अपनी हार को तोप वोटो की राजनीति करने वाली कांग्रेस की अध्यक्षीय उम्मीदवार श्री मती किरण वालिया ने अचानक से प्रचार बन्द कर घोषणा कर दी कि अगर हम सत्तासीन हुए तो इन्द्रा गांधी फिजिकल ऐजूकेशन एण्ड स्पोर्टस साईंसेज में हुई अध्यापकों की नियुक्तियों को खारिज कर दिया जायेगा।

● ● ●

डा॰ शंकधर सम्मानित—

दिल्ली विश्वविद्यालय के नैतिक शास्त्र के प्रोफेसर श्री एम॰ एम॰ शंकधर को शास्त्री इन्डोकनेडियन से शोध फैलोशिप से सम्मानित किया गया। इस फैलोशिप के अन्तर्गत उन्होंने स सप्ताह के "वेलफेयर स्टेट इन कनेडा ऐ॰ कम्परेटिव परोस्पेक्टिव" विषय पर कवीन्स विश्व विद्यालय किंगस्टन में मुख्यतः कार्य किया।

प्रो॰ शंकधर ने अर्जेन्टीना में अन्तराष्ट्रीय राजनैतिक विज्ञान संस्था की विश्व कांग्रेस में वेलफेयर स्टेट एन्ड डेवलपमेन्ट सोसाईटीस के एक सत्र की अध्यक्षता की एवं एक अन्य सत्र में 'पंचायती राज : स्थानीय स्वयं राज का भारतीय आदर्श' विषय पर एक पत्र भी प्रस्तुत किया।

प्रो॰ शंकधर के आगामी कार्यक्रम में उन्हें अक्टूबर नवम्बर-91 मास में शिमला में इन्डियन इन्स्टीट्यूट आफ एडवांस स्टडीज फार वेलफेयर स्टेट पर चार भाषणों की श्रृंखला में भाषण देंगें।

● ● ●

नव छात्र अभिवादन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् मंगोलपुरी इकाई (पश्चिमी विभाग) द्वारा २५ अगस्त ९१, रक्षा-बन्धन के दिन मंगोल पुरी क्षेत्र में नये छात्रों का अभिवादन समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग ७५ नये छात्रों ने भाग लिया। परिषद् के प्रदेश संगठन मंत्री श्री सुरेश जी ने अपने भाषण में कहा कि जैसे हम राखी के दिन बहन की रक्षा की कसम खाते हैं वैसे ही आज हम सबको मिल-कर समाज की रक्षा का प्रण लेना चाहिए। □

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
के श्री अरविन्दो महाविद्यालय में

अध्यक्ष

पद हेतु

संजय कुमार

बैलट क्रमांक 8

आओ साथ चलें
अ॰भा॰वि॰प॰ के साथ चलें !

डूकू उपरान्त डूटा पर भी भजपाईयों का कब्जा

—अजनिवेश अवस्थी

हर दो वर्ष के अंतर से होने वाले दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ चुनाव कई कारणों से इस बार काफी महत्वपूर्ण हो उठे थे । एक तो दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ देश के सर्वाधिक शक्तिशाली शिक्षक संघों में माना जाता है, दूसरे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर इस समय जो परिवर्तन हो रहे हैं । उनका शिक्षक संघ चुनावों पर असर पड़ना तय था अतः एक प्रकार से कह सकते हैं कि इन चुनाव परिणामों से दिल्ली विश्वविद्यालय के शिक्षकों का राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रति रुख स्पष्ट होता है ।

शिक्षक संघ चुनाव में इस बार शिक्षकों की लम्बे समय से चली आ रही मांगों के साथ ही शिक्षक संघ की बुद्धिजीवी एवं अकादमिक छवि भी महत्वपूर्ण मुद्दा था । तीनों प्रमुख शिक्षक संगठनों (एन.डी.टी.एफ., डी.टी.एफ. और इन्टक) ने शिक्षकों की भौतिक मांगों को अपने चुनावों में वरीयता दी किन्तु एन.डी.टी.एफ. ने दिल्ली विश्वविद्यालय के शैक्षणिक ढाँचे में बुनियादी परिवर्तन और अकादमिक छवि पर खुली बहस को न्योता देकर लोक से हटाने की चेष्टा की । गत वर्ष जब 'मंडल' के कारण विश्वविद्यालय पूरी तरह ठप्प हो गया था तो वाम पंथी शिक्षक संगठन के 'डूटा' अध्यक्ष ने यह कहकर सभी स्थिति पर बहस कराने से मना कर दिया था कि यह गैर विश्वविद्यालयी मुद्दा है, किन्तु इस बार उन्होंने अपने चुनाव प्रचार में आई.एम.एफ. ऋण को मुद्दा बनाना चाहा । 'इन्टक' शिक्षक संगठन अपने निहित स्वार्थों की वजह से आपस में बुरी तरह से बँटा तो हुआ ही था, साथ ही विश्वविद्यालय में उसकी छवि शिक्षकों के हितों का ध्यान रखने वाले संगठन की अपेक्षा व्यवस्था के भोंपू की ही थीं । एक तरफ तो पूरी तरह 'पार्टी लाइन' के आधार पर 'डूटा' को चलाने वाले वामपंथी थे और दूसरी तरफ व्यवस्था के भोंपू इन्टक, इन दोनों को ही दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षकों ने पूरी तरह नकारते हुए एन० डी० टी० एफ० के एन० के० ककड़ को अध्यक्ष तथा कार्यकारी परिषद् चारों प्रत्याशियों डा० मालती गार्गी महाविद्यालय डा० एम० सी० गर्ग पत्राकार विभाग श्री विकास साहनी हंसराज महाविद्यालय, श्री जय मोहन राय, पीजी डी० ए० बी० (सांध्य) महाविद्यालय विजयी हुए ।

अब इटंक को छः कार्यकारी परिषद् डी० टी० एफ० को चार तथा एक निर्दलीय उम्मीदवार पर सन्तोष करना पड़ा ।

एन.डी.टी.एफ. के डा० एन. के. ककड़ जो शिक्षक संघ अध्यक्ष चुने गए, पिछले दो दशक से शिक्षक-आन्दोलन से सक्रिय रूप से जुड़े रहे है । इस समय वे दिल्ली विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद् के निर्वाचित शिक्षक प्रतिनिधि है इससे पूर्व वे शिक्षक संघ कार्यकारी परिषद् के सदस्य, कोषाध्यक्ष एवं विद्वत् परिषद् के दो बार निर्वाचित प्रतिनिधि रह चुके है । रामजस कालेज में वाणिज्य शास्त्र के प्राध्यापक डा. एन. के. ककड़ कई पुस्तकों के लेखक हैं तथा विश्वविद्यालय की अन्य शैक्षिक गतिविधियों से निरन्तर जुड़े रहने वाले अत्यन्त विनम्र मृदुभाषी किन्तु अपनी बात को तार्किक ढंग से रखने वाले शिक्षक नेता के रुप में जाने जाते है ।

गौरतलब बात है कि डा० ककड़ ने अपने विजयी भाषण में मात्र शिक्षकों की भौतिक मांगों की बात न कह विश्वविद्यालय के शैक्षिक माहौल की बात कही है । देखना है कि आने वाले समय में वह इस का किस तरह से प्रतिपादित कर पाते है । □

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत"

Shanti Gyan Niketan

(An Innovative English Medium
Day Boarding Public School)

GOYLA (NAJAFGARH) NEW DELHI-110071

Ph. 5566551 Res. 530222

ॐ

School is promoted by

the Manufactures of

BOBBY SPECIAL SOAP

Fact : C8/11/PH. IInd
Mayapuri New Delhi
Ph. **592024**

Goyla (Najafgarh)
New Delhi
Ph. **5566551**

राष्ट्रीयता-राजनीति नहीं धर्म है

—महर्षि अरविन्द

जिसे हम हिन्दू धर्म कहते है, वह वास्तव में सनातन धर्म है, क्यों कि यही वह विश्वव्यापी धर्म है, जो दूसरे सभी धर्मों का आलिंगन करता है। यदि कोई धर्म विश्वव्यापी न हो तो वह सनातन भी नहीं हो सकता। कोई संकुचित धर्म, सांम्प्रदायिक धर्म, अनुदार धर्म, कुछ काल तक और किसी मर्यादित हेतु के लिए ही जीवित रह सकता है। यही एक ऐसा धर्म है जो विज्ञान के अधिकारों और दर्शन शासक के चिन्तनो का पूर्वाभ्यास देकर और उन्हें अपने ऊपर मिलकर अड़वाद पर विजय प्राप्त कर सकता है यही एक धर्म है जो मानव जाति के दिल में यह बात बिठा देता है कि भगवान हमारे निकट है, यह उन सभी साधनों को अपने अन्दर ले लेता है। जिनके द्वारा मनुष्य भगवान के पास पहुँच सकता है।

यही वह संदेश है जो आपको सुनाने के लिए आज मेरी जिह्वा पर रख दिया गया था। मैं जो कुछ कहना चाहता था वह मुझसे अलग कर दिया था और जो मुझे कहने के लिए दिया है। उससे अधिक मेरे पास कहने को कुछ है ही नहीं। जो वाणी मेरे अन्दर रख दी गयी थी, केवल वही आपको सुना सकता हूं। अब वह समाप्त हो चुकी है। पहले भी एक बार जब मेरे अन्दर यही शक्ति काम कर रही थी तो मैंने आपसे कहा था कि यह आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन नहीं है और राष्ट्रीयता एक राजनीति भी नहीं है। बल्कि एक धर्म है एक विश्वास है। एक निष्ठा है। यही बात मैं आज फिर दोहराता हूं, किन्तु आज मैं उसे दूसरे रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। आज मैं यह नहीं कहता कि राष्ट्रीयता एक विश्वास है, एक धर्म है, एक निष्ठा है, बल्कि मैं यह कहता हूं कि सनातन धर्म राष्ट्रीयता है।

यह हिन्दू जाति, आर्य जाति सनातन धर्म को लेकर ही पैदा हुई है। उसी को लेकर चलती है और उसी में पनपती है। जब सनातन धर्म की हानि होती है तब इस जाति की भी अवनति होती है और यदि सनातन धर्म का विनाश संभव होता है तो सनातन धर्म के साथ इस जाति का विनाश हो जाता है। सनातन धर्म ही राष्ट्रीयता है। यही वह सन्देश है, जो मुझे आपको सुनाना है। □

MASTER BAND®

3052/37, Beadon Pura, Hardian Singh Road, Karol Bagh,
NEW DELHI-5

Ph : **5737671**

● GLORIOUS DRESSES ● PUNCTUAL TIME ● SPECIAL ARRANGEMENT FOR ORCHESTRA PARTY MARRIAGES PROCESSION, GHOHRI GAS & DELUXE BUSES CARS ETC.

SISTER CONCERN :

MASTER TOURIST CORP.

शैक्षिक वातावरण सुदृढ़ीकरण हेतु प्रवेश

अबाध रूप से चले आ रहे दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के चुनाव हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 13 सितम्बर को होने तय हुए हैं। विश्वविद्यालय के छात्र संघ से सम्बन्धित महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएँ

अवधेश शर्मा

इस दिन आगामी वर्ष में अपने हितों की रक्षा करने के लिए छात्र संघ प्रतिनिधियों का अपने मताधिकार द्वारा चयन करेंगे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने अध्यक्ष पद हेतु श्री अवधेश शर्मा (निवर्तमान उपाध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ), उपाध्यक्ष पद हेतु श्री राज कुमार, सचिव पद पर कु० सोनिया सेठ, सहसचिव पद के लिए श्री अजय चौहान को अपना प्रत्याशी बनाया है जब कि एन० एस० यू० आई० ने श्री नरेन्द्र गौड़, राजीव शर्मा, युवदीप सोलंकी मुकेश कुमार को अपने प्रत्याशी बनाया है।

छात्र संघ के इतिहास पर अगर एक नजर दौड़ाएँ तो पायेंगे कि दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का ही वर्चस्व रहा है। जब से प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली द्वारा छात्र संघ का चयन होने लगा तभी से विद्यार्थी परिषद् के उम्मीदवारों के जीतने का तांता सा ही बन्ध गया हालांकि पिछले चार-पाँच वर्षों से इस नियम में कुछ बदलाव आया है और एन० एस० यू० आई० तथा कुछ निर्दलीय उम्मीदवार भी जीत कर आये। हालांकि चुनावी दंगल में इस बार मुकाबला अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् और एन० एस० यू० आई० के बीच ही है

राज कुमार

कुल 29 प्रत्याशी है जिसमें से अध्यक्ष पद पर 6 उपाध्यक्ष पद पर 7 सचिव पद पर 11 एवं सहसचिव पद पर 9 उम्मीदवार है।

लेख लिखे जाने तक हालांकि चुनावी दंगल में एन० एस० यू० आई० के असन्तुष्ट नेताओं का भी अलग से पैनल लड़ाने की बात भी विश्वविद्यालय में खासी चर्चा का विषय बनी हुई है। परन्तु ये उम्मीदवार अपनी मातृ-कुल पार्टी के उम्मीदवार को नुकसान पहुँचाने से ज्यादा दम नहीं रखते हैं।

छात्रों को इन प्रत्याक्षियों से परिचित कराने की दृष्टि से 'छात्र-शक्ति' ने इनसे संपर्क बनाने का भरसक प्रयास किया परन्तु विद्यार्थी परिषद् के प्रत्याशियों से ही

एवं परीक्षा प्रणाली में सुधार अवश्यमेव

—अजयपाल शर्मा

जल्दबाजी हो जाती क्योंकि नाम दाखिल करने के बाद श्री एन० एस० यू० आई० द्वारा अपना पैनल एक बार घोषित करने के बावजूद एन० एस० यू० आई० द्वारा पैनल बदलने को उम्मीदवारों को अटकलों का बाजार गर्म रहा। 'छात्र-शक्ति' के संपादक श्री दिनेश वाधवा द्वारा इन उम्मीदवारों से हुई बातचीत के कुछ अंश तथा उम्मीदवारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है—

अध्यक्ष—पद के लिए जहाँ एन० एस० यू० आई० ने [illegible] को कि छात्र संघ कार्यकारी परिषद् के सदस्य रहे हैं, विद्यार्थी परिषद् के अध्यक्ष पद के

सोनिया सेठ

उम्मीदवार श्री अवधेश शर्मा के मुकाबले में उतारा है। श्री शर्मा वर्तमान छात्र संघ के उपाध्यक्ष तथा श्री अरविन्दो महाविद्यालय के छात्र हैं। रामलाल आनन्द महाविद्यालय से वाणिज्य स्नातक श्री शर्मा दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के केन्द्रीय पार्षद के लिए वर्ष 1985-86 में चुने गये। अपने प्रारंभ के छात्र काल से ही वे छात्र आन्दोलन से जुड़े रहे हैं, तथा छात्र संघ का दायित्व जिम्मेदारी पूर्वक निभाते हुए छात्र संघ के संचालन में अनुभव व्यक्तित्व है। विश्वविद्यालय में

शैक्षिक माहौल के बारे में पूछे जाने पर तो श्री अवधेश एक दम तैश में आ गये। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में आने और जाने के दोनों रास्तों में भारी दलदल कीचड़ विद्यमान है। खुलासा करते हुए उन्होंने बताया कि प्रवेश तथा परीक्षा प्रणाली में भारी त्रुटियाँ हैं जिन्हें दूर करना बहुत जरूरी है। अपने कार्यकाल की उपलब्धियाँ गिनाते हुए उन्होंने बताया कि

—प्रवेश के समय 'पहले आओ पहले पाओ' नियम खत्म हुआ।

—तकनीकी विषयों के अंक प्रवेश के लिए जुड़ने प्रारम्भ हुए।

—मेरिट के आधार पर दाखिलों में सुधार।

—तीन नये महाविद्यालय खोले गये।

—100 कमरों का छात्राओं के लिए छात्रावास का साउथ कैम्पस में निर्माण प्रारम्भ

अजय चौहान

पिछले छात्र संघ में अपने सभी साथी पदाधिकारियों की चर्चा आते ही श्री शर्मा तिलमिला उठे। उन्होंने बताया वे सारे पूरे कार्यकाल में राजनैतिक दबाव के तहत आपसी फूट का शिकार रहे। छात्र संघ कोष के भारी घाटा में ऐसा जुड़े सांस्कृतिक

पृष्ठ 5 का शेष

पहले छात्र चुनाव में छात्राएं पदाधिकारी का चुनाव नहीं लड़ती थी। प्रत्यक्ष चुनाव शुरू होने के पश्चात् ही वे चुनाव लड़ने लगी। इस संबंध में पहल अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने की जब 1974 में उसने एक छात्रा को सह सचिव पद का प्रत्याशी बनाया। उसके बाद सभी वर्षों में छात्राएं किसी न किसी पद पर चुनाव लड़ती व जीतती रही हैं।

अ० भा० वि० प० ने 1968 से लगातार छात्र संघ चुनावों में भाग लिया यद्यपि 1978 से 1981 के बीच एक राष्ट्रीय नीति के कारण उसने चुनावों में भाग नहीं लिया। 1968 से पूर्व अ० भा० वि० प० के कार्यकर्ता यदाकदा चुनाव में भाग लिया करते थे। अप्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली के दौरान चुनाव संगठनों के नाम पर नहीं लड़े जाते थे तथा प्रत्यक्ष चुनाव प्रणाली के अंतर्गत अ० भा० वि प० पहला संगठन था जिसने अपने नाम से चुनाव लड़ना प्रारंभ किया। बाद में अन्य छात्र संगठन भी अपने नामों से लड़ने लगे।

जहां तक अ० भा० वि० प० का संबंध है 1968 से 1970 के तीन चुनावों में उसे सफलता नहीं मिली परंतु सत्तर के दशक की शुरुआत के साथ अ० भ० वि० प० छात्र संघ चुनाव जीतने लगा तथा छात्र संघ पर उसका लगभग एकाधिकार स्थापित हो गया व उसके बाद उसकी जीत का तांता बंध गया। 1971 में अध्यक्ष पद, 1971 में अध्यक्ष व सचिव पद व उसके पश्चात के तीन वर्षों (1973, 1974 व 1977) में उसे चारों पद मिले। 1978 में परिषद ने चुनाव नहीं लड़ा परंतु उसी वर्ष जनता विद्यार्थी मोर्चा की स्थापना हुई जिसे अध्यक्ष पद छोड़कर शेष तीन पदों पर विजय मिली। उसके पश्चात् जनता विद्यार्थी मोर्चा की जीत का तांता बंध गया जो 1981 तक चलता रहा।

1982 में अ० भा० वि प० पुनः मैदान में आई। तब वह ज० वि० मो० के साथ मिलकर चुनाव लड़ने लगी। यह क्रम 1987 तक चला तत्पश्चात् ज० वि० मो० चुनाव मैदान से अलग हो गया तथा परिषद चुनाव लड़ती रही।

1982 से 1984 तक के तीन वर्षों में ज० वि० मो० अ० भा० वि० प० गठबंधन सभी पदों पर जीतता रहा। चुनाव जीतने की लंबी शृंखला में 1985 से व्यवधान आना शुरु हुआ। 1985 में ज० वि० मो०—अ० भा० वि० प० गठबंधन को केवल सचिव पद प्राप्त हुआ। 1986 में सचिव व सह सचिव पद मिले। 1987 से स्थिति फिर सुधरी जब गठबंधन को तीन पद मिले अध्यक्ष, सचिव व सह सचिव। 1988 में केवल परिषद चुनाव लड़ी तथा उसे तीन पद मिले अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व सचिव। परंतु 1989 में परिषद फिर हार गई तथा केवल उपाध्यक्ष पद पर ही जीत पाई।

छात्र संघ में पदाधिकारी रहने वालों की संख्या अब काफी हो गई है। यहां अब तक अध्यक्ष पद पर रहे व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

1954 : **अ० गजराजबहादुर** : फरीदाबाद में उद्योगपति व हरियाणा की राजनीति में सक्रिय;

1955 : **श्री प्राण सब्बरवाल** : दिल्ली में वरिष्ठ पत्रकार;

1956 : **श्री यदुकुल भूषण** : श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के पूर्व प्राध्यापक व इन दिनों मुंबई में एन० एम० इन्स्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज के निदेशक;

1957 : **श्री कृष्णानंद शर्मा** : दिल्ली में वस्त्र निर्यातक;

1958 : **श्री नरेन्द्र मेहता** : अमरीका में वित्त व्यवसाय;

1959 : **श्री रामलुभाया लखोना** : हॉलैण्ड में व्यवसाय;

1960 : **श्री वीरेश प्रताप चौधरी** : वकील, दिल्ली की राजनीति में सक्रिय;

1961 : **श्री मदन लाल सलूजा** : अमरीका में मैनेजमेंट एण्ड लेबर लॉ के प्राध्यापक;

1962 : **श्री जोगेन्द्र सिंह सेठी** : दिल्ली में व्यापारी

1963 : **श्री नरेन्द्र कालिया** : अमरीका में समाज शास्त्र के प्राध्यापक;

1964 : **श्री सुरेन्द्र सेठ** : दिल्ली के उद्योगपति;

1965 : **श्री अशोक मरवाह** : दिल्ली में वकील;

1966 : **श्री सुभाष गोयल** : दिल्ली में ट्रैवल एजेंसी के मालिक;

1967 : **श्री हरचरण सिंह जोश** : दिल्ली की राजनीति में सक्रिय;

1968 : **श्री अजीत सिंह चड्ढा** : दिल्ली में निर्यातक;

1969 : **श्री सुभाष साहनी** : दिल्ली में व्यवसाय;

1970 : **श्री सुभाष चोपड़ा** : मेडिकल इनस्ट्रूमेंट्स का व्यवसाय, दिल्ली की राजनीति में सक्रिय;

1971 : **श्री भगवान सिंह** : दिल्ली में इन्टीरियर डेकोरेशन का व्यवसाय;

1972 : **श्री श्रीराम खन्ना** : दिल्ली विश्वविद्यालय में कॉमर्स के रीडर;

1973 : **श्री आलोक कुमार** : दिल्ली में वकील;

1974 : **श्री अरुण जेटली** : दिल्ली में वकील, राजनीति में सक्रिय;

1977 : **श्री विजय गोपाल** : दिल्ली में व्यापार, राजनीति में सक्रिय;

1978 : **श्री हरिशंकर** : दिल्ली में व्यवसाय, राजनीति में सक्रिय;

1979 : **श्री राजेश ओबराय** : कैंसर रोग के कारण स्वर्गवासी;

1980 : **श्री विजय जॉली** : दिल्ली में निर्यातक, राजनीति में सक्रिय;

1981 : : **श्री सुधांशु मित्तल** : दिल्ली में व्यवसाय;

1982 : **श्री योगेश शर्मा** : दिल्ली में व्यवसाय;

1983 : **श्री अनिल सोनी** : दिल्ली में वकील;

1984 : **श्री बलराम यादव** : दिल्ली में व्यवसाय, राजनीति में सक्रिय;

1985 : **श्री अजय माकन** : दिल्ली में व्यवसाय, मजदूर नेता;

1986 : **श्री मदन सिंह बिष्ट** : दिल्ली में व्यवसाय;

1987 : **श्री नरेन्द्र टंडन** : दिल्ली में व्यवसाय, राजनीति में सक्रिय;

1988 : **श्री आशीष सूद** : अ० भा० वि० प० के राष्ट्रीय मंत्री; तथा

1989 : **सुश्री अंजु सचदेवा** : वर्तमान अध्यक्ष

□

N. L. INKS

SPECIALIST IN :

NEWS PRINTING AND OFF-SET PRINTING INKS

591/2AB GROUND FLOUR,

ARJUN GALI, VISHWAS NAGAR

SHAHDRA-DELHI-110032

Phone : **2215299**

Prop :- UMESH GOEL

—पृष्ठ 7 का शेष

व्यवसायिक राजनीति की प्रवृत्ति निश्चित रूप से कम होगी।

● **क्या इन कदमों से छात्रों के अधिकारों का हनन नहीं होगा ?**

□ ऐसा नहीं है। चुनाव में भाग लेना हर एक का अधिकार नहीं है। भारतीय संविधान के अनुसार अठारह वर्ष का व्यक्ति मत तो दे सकता है किंतु चुनाव लड़ने के लिए न्यूनतम आयु पच्चीस वर्ष और कुछ चुनावों में तो उससे भी अधिक निश्चित की गयी है। दरअसल चुनाव लड़ने वाल व्यक्ति को अपेक्षाकृत अधिक परिपक्व होना चाहिए। ये कदम उसी दिशा की ओर बढ़ाए गए कदम होंगे।

● **दिल्ली विश्वविद्यालय में कुछ कालेज छात्र संघ से सम्बद्ध नहीं हैं। क्या आप इसे उचित मानते हैं ?**

□ छात्र संघ संविधान के अनुसार कॉलेजों को छात्र संघ से सम्बद्ध रहने अथवा न रहने का अधिकार प्राप्त है। समय-समय पर कालेज इससे जुड़ते अथवा अलग होते रहे हैं। मेरे विचार में सभी कालेजों को छात्रसंघ से सम्बद्ध होना चाहिए। सभी विद्यार्थियों को लोकतंत्र के लिए प्रशिक्षित होने का अधिकार मिलना ही चाहिए।

● **दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के कोष में कुल कितना धन होता है और इसका स्त्रोत क्या है ?**

□ कुछ समय पहले छात्रसंघ से सम्बद्ध सभी कॉलेजों के विद्यार्थियों से प्रतिविद्यार्थी एक रुपया लिया जाता था और कुल कोष लगभग 40 हजार रुपये होता था। जुलाई 1990 यह राशि पांच रूपया प्रति विद्यार्थी कर दिया गया है और कुल धनराशि लगभग दो लाख रूपये हो गयी है।

● **छात्र संघ का बजट कैसे निर्मित किया जाता है ?**

□ व्यवहारिक स्थिति तो यह है कि दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ पदाधिकारी बजट बनाते ही नहीं है और इस धन को अपनी इच्छा और सुविधा से खर्च करते है।

● **छात्र संघ कोष से धन निकालने और उसे व्यय करने का अधिकारी कौन है ?**

□ नियमतः इसके लिए बजट बनाना चाहिए। छात्रसंघ पदाधिकारी छात्रसंघ सलाहकार और कोषाध्यक्ष के साथ मिलकर बजट बनायें और उसे केन्द्रीय परिषद् में प्रस्तुत करें। फिर बजट के प्रावधानों के अनुरूप धन खर्च करें। किंतु आजकल ऐसा होता नहीं है छात्रसंघ पदाधिकारी सलाहकार की सहमति प्राप्त कर लेते हैं और फिर कोषाध्यक्ष को भी धन निकलवाने के लिए हस्ताक्षर करने पड़ते हैं।

● **छात्र संघ कोष के दुरुपयोग की चर्चा प्रायः सुनने-पढ़ने में आती हैं। आप इस सम्बन्ध में कुछ कहना चाहेंगे ? वर्तमान और अतीत में भी क्या इसका दुरुपयोग हुआ है ?**

□ बजट न बनने से दुरुपयोग तो होगा ही। छात्रसंघ पदाधिकारी जब स्वेच्छा से धन खर्च करेंगे तो उसके सदुपयोग के सम्बन्ध में आप कैसे निश्चित हो सकते हैं। पिछले वर्ष एक को छोड़कर शेष तीनों पदाधिकारियों ने पर्याप्त धन कोष से लिया है, यद्यपि इसके लिए कोई बजट नहीं बनाया गया था। अतीत में इसके दुरुपयोग की आशंका से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

● **कोष के दुरुपयोग को किस प्रकार रोका जा सकता है ?**

□ इसके लिए विश्वविद्यालय को कठोर नियम बनाने होंगे। छात्रसंघ चुनाव के लिए सुझाये गए कदमों को उठाया जाए साथ ही छात्रसंघ सलाहकार इस सम्बन्ध में कठोर रुख अपनाएं तो इस समस्या का हल सम्भव है। छात्रसंघ भी अपनी गतिविधियां विकेंद्रीकृत कर इस समस्या के हल में सहयोग दे सकता है। इससे छात्रसंघ जो सकारात्मक गतिविधियां करता है, उन्हे बढ़ावा मिलेगा।

—शेष पृष्ठ 24 पर

वामपंथी टिके बंगाल में गुण्डागर्दी के बल पर

—तपन घोष

पश्चिम बंगाल में SFI के ध्वज पर अंकित स्वाधीनता, लोकतन्त्र, समाजवाद, एक प्रभावी छात्र संगठन है इस लिए बंगाल के छात्र समाज को प्रभावी प्रत्यक्ष रूप से जानने का अवसर मिलता है। प० बंगाल में 9 विश्व-विद्यालय है। लोकतन्त्र पुजारी SFI और उनकी पार्टी CPI (M) 14 साल सत्ता में रहने के बाद भी बंगाल के किसी विश्वविद्यालय में विश्वविद्यालय स्तर का चुनाव कराने की मानसिकता नहीं हो सकी। कालिजों और स्नातकोत्तर केन्द्रों में अलग-2 चुनाव होता है। दिल्ली जे०न०यू० ओसमानिया जैसा संपूर्ण विश्व-विद्यालय को प्रतिनिधित्व करने वाला कोई भी छात्र संघ बंगाल मे नहीं बन पाया। बंगाल के स्नात्कोत्तर केन्द्र के छात्र संघ को ही विश्वविद्यालय छात्र रूप कहा जाता है जो सही अर्थों में बेकार है।

अब प्रश्न यह उठता है कि बंगाल में SFI क्यों विश्वविद्यालय स्तर पर चुनाव नहीं कराती ? SFI बंगाल में केवल स्नातकोत्तर स्तर के छात्र संघ को विश्व-विद्यालय छात्र संघ कहने की धोखाबाजी क्यों कर रही है उसके पीछे जो कारण है वह शायद बंगाल के बाहर का छात्र इतनी आसानी से नहीं समझ सकता परन्तु बंगाल का छात्र इसे आसनी से समझ सकता है। स्नाकोत्तर केन्द्रों पर आम छात्रों को शारीरिक नुकसान पहुचाकर और वामपंथी अध्यापकों एवं कर्मचारियों की सहायता से अपने विरोधियों का भविष्य नष्ट कर देतें है। छात्र वासों के छात्रों पर SFI द्वारा अकथ्य अत्याचार करवाये जाते है। और यह सब डिग्री कालेजों में सम्भव नहीं हो सकता। यदि कालेजों में विश्वविद्यालय छात्र संघ का चुनाव होता तो निश्चय ही SFI को हार का मुंह देखना पड़ता।

SFI की लोकतन्त्र प्रियता का एक और नमूना है, बंगाल में SFI जिन कालेजों में भी चुनाव जीतती है उनमें से 80% सीटों पर बिना चुनाव लड़े ही जीतती है इसके लिए जहां वह शक्तिशाली है वहां किसी को अपने खिलाफ चुनाव में खड़ा ही नहीं होने देती। SFI द्वारा बिना लड़े चुनाव जीतने का प्रमाण PIC (M) के दैनिक अखबार गणशक्ति में छपने वाले समाचारों लगातार मिल सकता है। लगातार शब्द का प्रयोग इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि बंगाल के किसी भी कालेज में शैक्षिक कलेण्डर नही है। सालभर यहां किसी न किसी कालेज में छात्र संघ का चुनाव चलता ही रहता है।

SFI की पारदर्शिता का और एक निदर्शन है—कल्याणी विश्वविद्यालय। वहां एक कैम्पस विश्वविद्यालय है। और वहां भी बाकी स्थानों जैसे SFI के लोग ही छात्र संघ में हैं। वहां भी वह हर वर्ष बिना चुनाव लड़े ही जितती थी। SFI का कोई विरोधी छात्र संगठन सक्रिय नहीं था। इसलिए इसके कार्यों पर भी कोई रोक-टोक नहीं थी SFI वहां Corruption और nepotism में इतनी डूबी थी इसकी चर्चा जब वहां अखबारों में हुई और लाखों रूपये की धांधली का पर्दाफाश हुआ और इतना ही नहीं प्रवेश, छात्र वृत्ति, Student Fellowship आदि मामलों में भी अनेक प्रकार की दुर्नीतियों से SFI पीड़ित है। जब अपनी इन धांधलियों का भण्डाफोड़ होते देखा तो SFI के कार्यकर्ताओं ने रिकोर्ड रूम से आग लगा सारी फाइलें जला डाली। इस घटना से काफी हल्ला मचा, और अन्त में छात्र समाज की आवाज के आगे घुटने डालते हुए SFI की प्रदेशिक कमेटी ने विश्व-विद्यालय ईकाई को भग करने की घोषणा पड़ी और अभी तक कल्याणी विश्वविद्यालय में SFI अपनी इकाई पुनर्गठित करने की हिम्मत नहीं जुटा पाई है। □

"संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ जो मनुष्य की आशा का पेट भर सके
मनुष्य की आशा समुद्र के समान है, वह कभी नहीं भरती।"

पृष्ठ 3 का शेष—

क्षेत्रों के अग्रगण्य एवं प्रेरणादायी व्यक्तित्वों को विद्यार्थियों के बीच लाना, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का दर्शन कराना, समाज के दलित एवं पिछड़े बंधुओं के प्रति उनमें स्नेह एवं अपनत्व का भाव भरने जैसे कार्यक्रम हाथ में लेने पड़ेंगे। उक्त गुणों से समन्वित छात्र समाज की एक इकाई के रूप में अपना विकास कर उचित दिशा में आगे बढ़ेगा, और इसमें कोई संदेह नहीं। यह श्रेय 'छात्र संघ' को लेना ही चाहिये।

जहाँ एक ओर 'छात्र संघ' का दायित्व है कि वह छात्रों को सशक्त नेतृत्व देने वाला मंच बने तथा अपनी जिम्मेदारी प्रभावी छात्र संघ एवं मर्यादाओं का निर्वाह करते हुए निभाये, वहीं दूसरी ओर छात्रों का भी यह दायित्व बनता है कि वे 'छात्र संघ' का दायित्व सौंपते समय अपने विचारों को कालेज केन्टीन तथा सिनेमाघर में रियायती टिकट जैसे तुच्छ मुद्दों तक ही सीमित नहीं रखेगा बल्कि राष्ट्रीय मुद्दों का भी इसमें समावेश कर जागरूक नागरिक होने का परिचय देगा तथा ऐसे लोगों को 'छात्र संघ' संचालन का दायित्व सौंपेगा जो अपने निजी एवं छात्र संगठन के स्वार्थ से ऊपर उठ राष्ट्रीय परिपेक्ष में सही मायनों में छात्रों के हित में कार्य करते हुए राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का एक सशक्त माध्यम बन सके। □

पृष्ठ 22 का शेष—

● **कालेज छात्र संघों में आर्थिक घोटालों की संभावना कितनी होती है ? विश्वविद्यालय छात्र संघ कोषाध्यक्ष क्या उन घोटालों के सम्बन्ध में हस्तक्षेप कर सकता है।**

□ कॉलेज छात्रसंघ में मुख्य अधिकारी प्राचार्य होता है। धन उसी के अधिकार में होता है, अतः घोटालों की संभावना अत्यंत क्षीण होती है। फिर भी यदि कहीं ऐसा हो तो विश्वविद्यालय छात्रसंघ कोषाध्यक्ष का उसमें कोई हस्तक्षेप नहीं होता।

● **आगामी छात्र संघ चुनावों के सम्बन्ध में आप कुछ कहना चाहेंगे ?**

□ मैं एक स्वच्छ छवि वाले कर्मठ छात्रसंघ की कामना करता हूं। □

FOR BETTER AND HEALTHY ACEDAMIC
ATMOSPHERE IN THE SHIVAJI COLLEGE
CHOOSE & ELECT YOUR OWN

A.B.V.P. CANDIDATES

LOKESH DUTT : *Secretary*

SANJAY GUPTA: *Central Councillor*

GO ONE STEP AHEAD WITH **A.B.V.P**

"गुणों से ही मनुष्य महान बनता है। महल के शिखर पर बैठ जाने से कौआ गरुड़ नहीं बनता।"

पृष्ठ 17 का शेष—

— छात्र संघ चुनावों में विभिन्न प्रचार-प्रसार यंत्रों व सामग्री पर पूर्णतया रोक।

— छात्र-छात्राओं में राष्ट्रीय प्रेम एवं हिन्दू/राष्ट्रीय संस्कृति की भावना विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाना।

— विश्वविद्यालयों, कालेजों में अनिवार्य मूलभूत सुविधाओं व आवश्यकताओं को पूरा करना जैसे— लाइब्रेरी में पुस्तकों की व्यवस्था, कालेज एवं हॉस्टल में प्रवांछित/समाज की, तत्वों के प्रवेश पर रोक लगाना, परिसर में खेल कूद के मैदानों की पूर्ण व्यवस्था करना आदि।

— छात्रों के अनैतिक एवं गलत कार्यों को रोकने के प्रभावी उपाय एवं उनका कड़ाई से पालन करना।

आदि इस प्रकार के अनेक सुझाव है जिनका पालन करने से छात्र संघ प्रभावी एवं सार्थक हो सकता है एवं विद्यार्थियों में इसके प्रति पनपती उदासीनता पर अंकुश लग सकेगा। तथा जिन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु छात्र संघ की स्थापना की गई थी शनैः शनैः वे कार्य रूप में हमारे समक्ष आ सकते हैं। □

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ भारती

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का समकालीन हिन्दी कविता विशेषांक

- समकालीन हिन्दी कहानी **विशेषांक** के सफल प्रकाशन के बाद हिन्दी-अकादमी, दिल्ली ने समकालीन हिन्दी कविता विशेषांक प्रकाशित करने की योजना बनाई है।
- पत्रिका के शीघ्र प्रकाश्य इस विशेषांक में मूल्यांकन व आलोचना के धरातल पर सुपरिचित आलोचकों की सार्थक भूमिका के साथ-साथ समकालीन हिन्दी कवियों की हिस्सेदारी होगी।
- चार सौ से अधिक पृष्ठों का यह विशेषांक एक सामान्य अंक न होकर महत्वपूर्ण दस्तावेज होगा।
- यह अंक हिन्दी कविता के क्षेत्र में पाठकों, शोधार्थियों एवं पुस्तकालयों के लिए विशेष रूप से संग्रहणीय एवं उपयोगी होगा।
- पत्रिका के इस महत्वपूर्ण अंक का मूल्य मात्र बीस रुपये होगा।
- कृपया पत्रिका की प्रति सुरक्षित कराने के लिए शुल्क मनीआर्डर/पोस्टल-आर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सचिव, हिन्दी अकादमी, दिल्ली के पते पर भेजें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क—

डॉ० विजय मोहन सिंह
सचिव, हिन्दी अकादमी,
ए-२६/२७, सनलाइट इंश्योरेंस बिल्डिंग,
आसफअली रोड़, नई दिल्ली ११०००२

COMPUTER POINT
EDUCATION

For a student who may not get into a professional course even with 75%,

this ad could mean a career.

If you are a first year student worried about how your time in college will prepare you for a career, take a look at Computer Point. And discover how you can start a professional career the minute you leave college.

Open On Sundays

MAIT
EDUCATION FOR A PROMISING FUTURE

Contact our Career Consultants Today

COMPUTER POINT EDUCATION AND CONSULTANCY DIVISION

7255, Prem Nagar, Shakti Nagar Crossing, Delhi-110007. Phone : 2529321, 2924701

स्वच्छता से भरपूर वातावरण के लिए
गैंडा
ब्रांड फिनाईल
with R.W.C.-5
गैंडा ब्रांड फिनाईल बीमारियों को दूर भगाने में आप की मदद करता है। घर, दफ्तरों और दुकानों में उपयोगी किटाणनाशक गैंडा ब्रांड फिनाईल
निर्माता
ग्रान्ड कैमिकल वर्क्स
सी-212/12 मायापुरी औद्योगिक क्षेत्र, फेस-2
नई दिल्ली-110 064, फोन : 502696
IS:1061
PHENYLE
BLACK DISINFECTANT FLUID
GAINDA
BRAND
A POWERFUL DISINFECTANT & GERMICIDE
IS:1061
REGD. TRADE MARK
R.W.C 5.7 S.A. 2.5
फिनाईल
मफाई और खुशहाली का रक्षक'

R.N 32464/78

THE PRINT MEDIUM THAT GOES PLACES.

T-Shirts, Sports Shirts and Sportswear with your Message

There's nothing quite like the Pytex range of hosiery products for the promotion of your product's or organisation's name, your message or anything that can be printed.

It's so versatile : The name or the message can be printed on just about any part of the apparel. And the wide choice of materials and colours makes the design possibilities almost endless.

It's effective : Your message lasts and lasts and lasts.... for years. This is further ensured by the high quality of the materials used by us - be it cotton, acrylic or blended.

It's inexpensive : If you consider the life, the exposure and the prestige that your message gets, you'll discover it's really a 'low-cost-high impact' medium. The cost becomes even lower when you order in bulk—in fact, we offer special terms on such orders.

It's popular : A large number of hotels, airlines, embassies, social organisations and educational institutions are using it to make their make and the message go places.

If you too would like the same for your organisation, get in touch with us today.

PYTEX®
HOSIERY MILLS

'Pytex House'
Ist Floor, 5640, Main Qutab Road,
New Delhi-110055. Phone : 775579

Crescent 2978